जैन कन्या पाठशाला (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय

डॉ अनामिका जैन
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग

तृतीय प्रश्न पत्र
विशिष्ट रचनाकार : प्रेमचंद
एम ए (प्रथम वर्ष)
द्वितीय सेमेस्टर

ईदगाह कहानी किसानों,दलितों तथा स्त्रियों को अपनी लेखनी का आधार बनाने वाले,वर्ण व्यवस्था की कुरीतियों को अपनी रचनाओं में स्थान देने वाले,साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का आधार मानने वाले,साहित्य में यथार्थ के समर्थक,बाल मनोविज्ञान को अपनी साहित्य में शामिल करने वाले,महान साहित्यकार,संपादक,नाटककार,उपन्यासकार,निबंधकार, आलोचक तथा विलक्षण प्रतिभा संपन्न साहित्यकार “प्रेमचंद जी” द्वारा विरचित है।

यह कहानी ईदगाह उत्साह से युक्त त्योहार ईद को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानी है।इस कहानी में प्रेमचंद जी ने ग्रामीण मुस्लिम जीवन को बहुत ही सरल तथा सुरुचिपूर्ण ढंग से रेखांकित किया है।

पात्र एवं चरित्र चित्रण प्रयोग की दृष्टि से

पात्र दो प्रकार के होते हैं।प्रधान पात्र और गौण पात्र।महमूद,नूरे,सम्मी,मोहसिन,हामिद तथा अमीना यह छः प्रधान पात्र की श्रेणी में आएंगे,क्योंकि यह पूरी कहानी में गतिशील बने रहे हैं और इनका

अधिकाधिक प्रयोग हुआ है।जबकि आबिद,दुकानदार ग्रामीण, मोहसिन की छोटी बहन आदि यह सभी गौण पात्रों की श्रेणी में आएंगे,क्योंकि यह गतिशील नहीं रहे तथा कहानी में इनका प्रयोग बहुत कम हुआ है।कहानी के केंद्र में हामिद है,जिसे मुख्य पात्र की श्रेणी में रखा जा सकता है।वह कहानी के प्रारंभ से लेकर अंत तक विद्यमान है।वह एक तार्किक बालक के रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है।

यह कहानी 80-90 वर्ष पूर्व भारतवर्ष के मुस्लिम ग्रामीण क्षेत्र को लक्ष्य करके लिखी गई थी,किंतु वह आज भी नई कहानी प्रतीत होती है।ऐसा प्रतीत होता है मानो यह आज लिखी गई हो।जिस तरह से इस कहानी में मुस्लिम परिवार और मुस्लिम ग्राम का उल्लेख है,गरीबी का उल्लेख है,वह यत्र-तत्र आज भी विद्यमान है।हां,यह अलग बात है कि कुछ कमी अवश्य आई है।इस कहानी में सजीव वातावरण है।प्रेमचंद जी जो कुछ कहना चाहते हैं,वे एक वातावरण बनाते हुए कहते है

और आगे बढ़ जाते हैं।चाहे वह मेले का वातावरण हो या फिर मेले के मार्ग का वातावरण।वे इस तरह से उल्लेख करते हैं मानो वही वातावरण उत्पन्न हो गया हो | भाषिक दृष्टि से प्रेमचंद जी की यह कहानी पठनीय है।छोटे-छोटे संवाद,सरस कथोपकथन,मुहावरों का उचित प्रयोग,प्रसंगानुकूल भाषा तथा अनुकूल शब्दावली का प्रयोग।ये सभी इस कहानी की भाषिक विशेषताएं हैं।कुछ मुहावरों का प्रयोग देखें-मुंह चुराना,उल्लू बनाना,जी चुराना,नानी मरना,छक्के छूटना,आदि इन सभी मुहावरों से भाषा प्रभावशाली और सरस बन गई है।

कहानी का शीर्षक 'ईदगाह' सार्थक है,क्योंकि कहानी में लगभग सारा अंश ईदगाह जाने,ईदगाह से आने,ईदगाह के आसपास लगे मेले आदि इसी शीर्षक पर केंद्रित है।अतः ईदगाह नामक शीर्षक प्रासंगिक है।

उद्देश्य की दृष्टि से यह कहानी अत्यंत प्रासंगिक है।कहानी का मूल उद्देश्य बाल मनोविज्ञान को रेखांकित करना है।इस उद्देश्य को पाठक तक पहुंचाने में लेखक पूर्णतः समर्थ सिद्ध हुआ है।

दूसरा उद्देश्य गरीबी और अमीरी को रेखांकित करना है।अमीना और हामिद जिस तरह से गरीबी के शिकार हैं,उसी तरह आज भी लोग गरीबी से पीड़ित हैं।लोग इससे उबर नहीं पाएं हैं।आज भी कुछ लोग ऐसे हैं जो रोटियों के लिए मोहताज हैं।गरीबी हो या अमीरी हमें सदैव सम स्थिति मे रहना चाहिए। हामिद पर गरीबी का असर नहीं होता।वह हमेशा प्रसन्न रहता हैं।हम पठकों को भी हामिद की तरह खुश रहना चाहिए।